अध्याय

17

संस्कृति

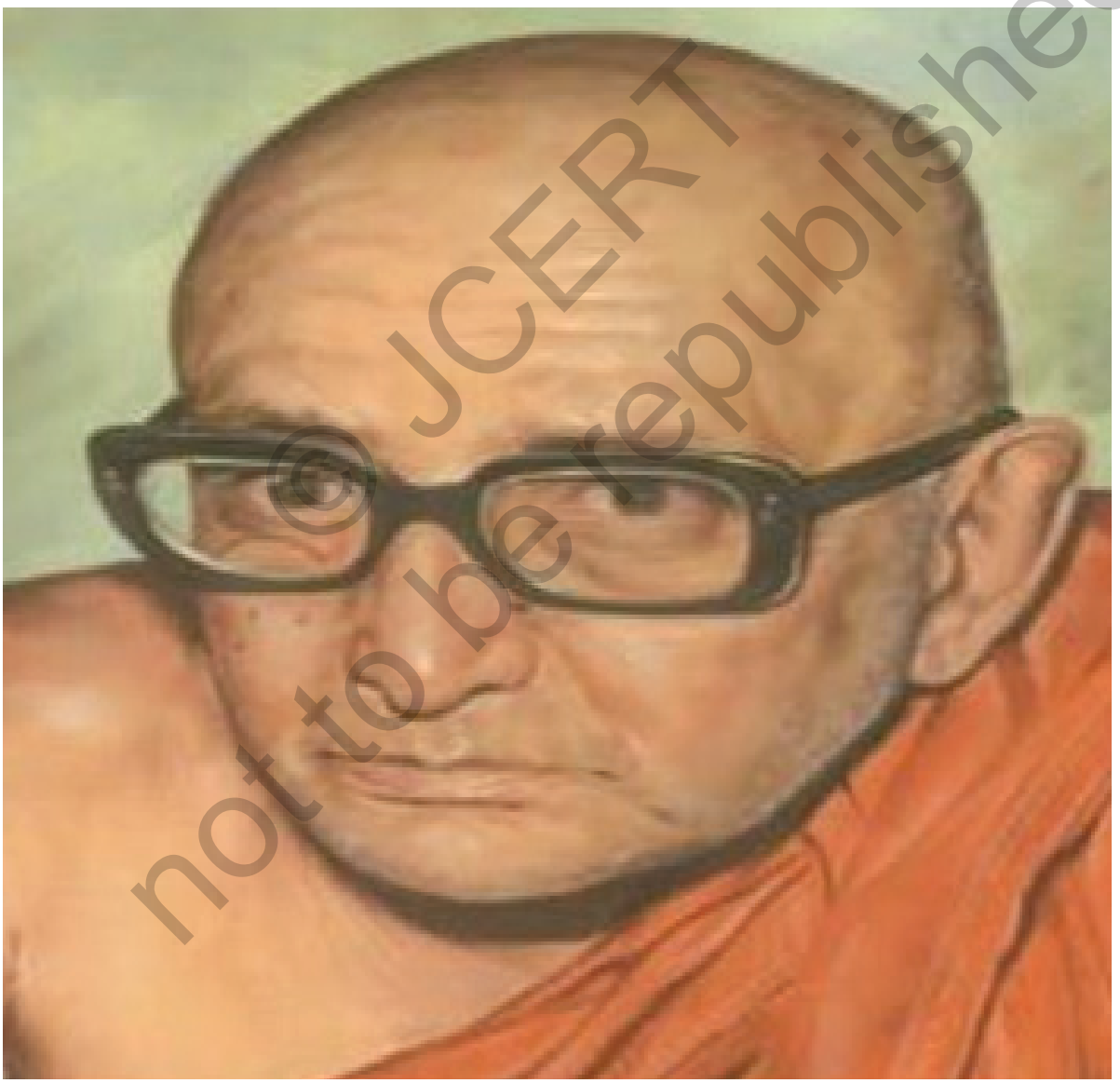

भदंत आनंद कौसल्यायन

© JCERT not to be republished

1 भदंत आनंद कौसल्यायन

जीवन परिचय

- जन्म — 05 जनवरी सन् 1905 ई .
- गाँव-सोहना, जिला- अंबाला, पंजाब
- बचपन का नाम - हरनाम दास
- पिता - लाला रामशरण दास
- शिक्षा - नेशनल कॉलेज, लाहौर से बी. ए .
- महापरिनिर्वाण-नागपुर, 22 जून सन् 1988 ई .
- 3 अनन्य हिन्दी सेवी
  10 साल तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रधानमंत्री
  विद्यालंकार विश्वविद्यालय, श्रीलंका के हिन्दी विभाग के विभागाध्क्ष
  देश — विदेश की काफ़ी यात्राएँ
  बौद्ध धर्म के प्रचार — प्रसार के लिए सारा जीवन समर्पित
  20वीं शताब्दी के बौद्ध धर्म के सर्वश्रेष्ठ क्रियाशील व्यक्ति

साहित्यिक परिचय

- भिक्षु के पत्र,जो भूल न सका, आह! जो ऐसी दरिद्रता,बहानेबाजी,यदि बाबा न होते,रेल का टिकट,कहाँ क्या देखा,संस्कृति,देश की मिट्टी बुलाती है,मनुस्मृति क्यों जलाई गई ?
- 5 स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी
- महात्मा गाँधी, बाबा भीमराव अंबेडकर और महापंडित राहुल सांकृत्यायन से काफ़ी प्रभावित
- श्रीलंका में बौद्ध भिक्षु
- संस्कृत, पालि,प्राकृत,उर्दू,हिन्दी एवं अंग्रेज़ी पर समान अधिकार

पाठ- परिचय

- प्रस्तुत पाठ भदंत आनंद कौसल्यायन के द्वारा रचित एक निबंध है।
- इस निबंध में सभ्यता और संस्कृति को पारिभाषित किया गया है।

© JCERT not to be republished

संस्कृति का परिणाम सभ्यता है।इसे दो उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है —आग तथा सुई - धागे का आविष्कार।

आग अथवा सुई- धागे का आविष्कार करने का खयाल जिस व्यक्ति के मन में सर्वप्रथम आया होगा वह खयाल ही संस्कृति है अर्थात् किसी नए वस्तु की खोज़ करने की शक्ति की संस्कृति कहलाती है।

जिस संस्कृति के द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की उसका नाम सभ्यता है।

जिस व्यक्ति में संस्कृति जितनी अधिक व परिष्कृत होगी वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा।

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नई चीज़ की खोज करता है ; किंतु उसकी संतान को वह चीज़ अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता।

आग अथवा सुई - धागे का आविष्कार शायद हमारी भौतिक प्रेरणा हो सकती है, परंतु जिसका पेट भरा हुआ और तन ढँका हुआ है और वह संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। रात को खुले आकाश में जगमगाते तारे उसे सोने नहीं देते क्योंकि वह यह जानने के लिए बेचैन रहता है कि आखीर यह मोती से भरा थाल है क्या ?

संस्कृति सिर्फ भौतिक प्रेरणा और ज्ञानेप्सा तक ही सीमित नहीं है। माता अपनी संतान के लिए रात भर जगती है।दयालु अपने मुँह का कौर दूसरों को खिला देता है। महामानव संसार के कल्याण हेतु अपना सर्वस्व त्याग कर देता है। यह भी संस्कृति का ही परिणाम है।

मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई - धागे का आविष्कार कराती है ; वह भी संस्कृति है, जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है,वह भी है ;और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है वह भी संस्कृति है।

© JCERT not to be republished

संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति हो जाएगी और असंस्कृति से असभ्यता का ही निर्माण होगा।

मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है और उसमें जितना अंश कल्याण का है, वह अकल्याणकर की अपेक्षा श्रेष्ठ ही नहीं स्थायी भी है।

शब्दार्थ –

भौतिक – सांसारिक,

आध्यात्मिक – आत्मा —परमात्मा से संबंधित,

साक्षात् – प्रत्यक्ष,

प्रवृत – मन का किसी विषय की ओर झुकाव,

परिष्कृत – शुद्ध किया हुआ,

अनायास – बिना प्रयास के,

सिद्धांत – सत्य के रूप में ग्रहण किया गया निश्चित मत,

अपरिचित – अनजान,

कदाचित – शायद,

शीतोष्ण – ठंडा और गर्म,

मनीषी – विद्वान,

विचारशील पुरस्कर्ता – प्रारंभ करने वाला,

ज्ञानेप्सा – ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा,

कौर – ग्रास,

भाग्यविधात – भाग्य बनाने वाला,

वशीभूत – अधीन,

रक्षणीय – रक्षा करने योग्य,

प्रज्ञा – बुद्धि,

अविभाज्य – अखंडित

प्रश्न — अभ्यास

प्रश्न 1. लेखक की दृष्टि में ' सभ्यता ' और ' संस्कृति ' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है ?

उत्तर: लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक इसलिए नहीं बन पायी, क्योंकि हम इन दोनों बातों को एक ही समझते हैं या एक – दूसरे में मिला देते हैं। वस्तुतः इन दोनों शब्दों के साथ अनेक विशेषण लगा देने के कारण इनका अर्थ और गड़बड़ हो जाता है। दोनों के अन्तर को समझने का प्रयास भी नहीं हुआ और संस्कृति को देशों और धर्मों में बाँटकर पारिभाषित करने की भी प्रवृत्ति रही है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 2. आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है ? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे ?

उत्तर: आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज इसलिए मानी जाती है, क्योंकि यह खोज हमारे जीवन संचालन की एक बहुत बड़ी आवश्यकता भोजन पकाने के काम आती है। इसलिए इस खोज को आदिमनुष्य ने एक बहुत बड़ी खोज माना और आज भी हमारे जीवन में इसका सर्वोपरि स्थान है। इसकी खोज के पीछे पेट की ज्वाला शान्त करने की प्रेरणा प्रमुख थी, साथ ही प्रकाश और गर्मी पाने की प्रेरणा भी रही होगी।शीतऋतु से बचने के लिए आदिमानव इसका उपयोग करता होगा और इसी में माँस आदि भूनकर तथा जंगली कन्द - मूल पकाकर खाता होगा। शीत से रक्षा पाने और पेट भरने पर वह कितना आनन्दित होता होगा। इसी आनन्द की अनुभूति के कारण उसने अग्नि को देवता माना होगा और इसकी उपासना की होगी, जो आज भी प्रचलन में है।

प्रश्न 3. वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार वास्तविक अर्थ में 'संस्कृत व्यक्ति' उसे कहा जा सकता है, जो अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर किसी नयी चीज़ की खोज कर सके और उसका दर्शन करा सके। अर्थात् किसी नयी चीज़ का आविष्कर्ता ही वास्तविक अर्थ में संस्कृत व्यक्ति कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त खोजा,भगवान बुद्ध ने तृष्णा से वशीभूत लड़ती —कटती मानवता के लिए गृहत्याग कर दिया। अतः इन्हें 'संस्कृत व्यक्ति' कहा जा सकता है।

प्रश्न 4. न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौनसे तर्क दिए गए हैं ? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों ?

उत्तर: न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे लेखक ने तर्क देते हुए कहा है कि जो व्यक्ति अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नयी चीज़ का अनुसंधान और दर्शन करा सकता है, वही व्यक्ति संस्कृत है। न्यूटन ने भी अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर विज्ञान के नियम की खोज की और उसे सबके सामने रखा। इस कारण वह संस्कृत व्यक्ति हुआ। लेकिन दूसरे लोग न्यूटन के सिद्धान्त की बारीकियों को भले ही ज्यादा जानते हों, इसलिए वे सभ्य तो कहे जा सकते हैं, पर संस्कृत व्यक्ति नहीं कहला सकते हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर किसी नयी चीज की खोज नहीं की।

प्रश्न 5. किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई - धागे का आविष्कार किया होगा ?

उत्तर: जिस तरह आदिमानव ने सबसे पहले पेट की ज्वाला शांत करने के लिए आग का आविष्कार किया होगा,उसी प्रकार अपने शरीर को सर्दी - गर्मी से बचाने के लिए और सजाने के लिए सूई - धागे का आविष्कार किया होगा।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 6. 'मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।' किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब-

(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं।

(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।

उत्तर: (क) मानव संस्कृति एक है लेकिन यदि उसे हिन्दू और मुस्लिम धर्म के आधार पर देखा जाए तो काफी भेदभाव है। मनुष्य का यह स्वाभाविक गुण है, वह जिस संस्कृति का पक्षधर होता है उसको महान् बताना चाहता है और उसकी श्रेष्ठताओं और उपलब्धियों को याद रखना चाहता है। इसके साथ ही उसकी पहचान भी स्थापित करना चाहता है। मानव संस्कृति को धर्म-सम्प्रदाय के आधार पर बाँटने की चेष्टाएँ की गई हैं अर्थात् हिन्दू संस्कृति और मुस्लिम-संस्कृति कहकर उनसे एक-दूसरे को खतरा बताया गया है।

उदाहरण के लिए, ताजिया निकालने के लिए यदि पीपल का तना कट गया हो तो हिन्दू-संस्कृति खतरे में पड़ गयी बताई जाती है। इसी प्रकार मस्जिद के सामने बाजा बजने पर मुस्लिम संस्कृति खतरे में पड़ गयी बताई जाती है। इन बातों से मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं। उदाहरण के लिए (1) भारत को स्वतन्त्रता-प्राप्ति के समय धार्मिक आधार पर भारत-पाक का विभाजन किया गया। (2) भारतीय लोकतन्त्र में वोट बैंक की राजनीति अपनाकर नेताओं ने जातिगत आरक्षण देकर भारतीय संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टा की है।

(ख) मानव-संस्कृति एक है। इसी बड़ी सोच के आधार पर हिन्दू-मुस्लिम का भेद त्यागकर हमारे महापुरुषों एवं मनीषियों ने सभी संस्कृतियों की अच्छी चीजों को खुले मन से अपनाया। 'त्याग' संस्कृति का श्रेष्ठ गुण है इसलिए इस गुण को हिन्दू हो या मुसलमान हो या फिर अन्य कोई सम्प्रदायी हो, सभी ने समान रूप से उसे अपनाने की चेष्टा की है। इसी तरह 'बुद्ध' के 'अप्प दीपो भव' (अपने दीपक स्वयं बनो) पर सभी का समान रूप से अधिकार है। जब अमेरिका द्वारा जापान पर परमाणु बम गिराया गया तो दुनिया की सभी संस्कृतियों ने इसका खुलकर विरोध किया। इसी प्रकार 'रसखान' ने कृष्ण का गुणगान किया तो उस्ताद बिस्मिल्ला खां ने बालाजी के लिया। इसी प्रकार हजारों की संख्या में हिन्दू अजमेर शरीफ जाकर दुआ करते हैं और पीरों की पूजा करते हैं।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट कीजिए —

मानव की जो योग्यता उससे आत्म — विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम इसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ?

उत्तर: आशय यह है कि मानव की जो योग्यता है, उस योग्यता के आधार पर उसे मानव कल्याण के लिए उपयोगी चीजों का

© JCERT not to be republished

आविष्कार आग और सुई-धागे की तरह करना चाहिए। उसका यह आविष्कार सृजन कहलाता है लेकिन जब मनुष्य अपनी योग्यता के आधार पर विनाश के साधनों का निर्माण करता है तब उसे असंस्कृत कहा जायेगा और उसके आविष्कार या नये निर्माण को संस्कृति न कहकर असंस्कृति ही कहा जायेगा।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 8. लेखक ने अपने दृष्टिकोण से सभ्यता और संस्कृति की एक परिभाषा दी है। आप सभ्यता और संस्कृति के बारे में क्या सोचते हैं ? लिखिए।

उत्तर: लेखक ने स्पष्ट बताया है कि संस्कृति और सभ्यता में पर्याप्त अन्तर है। मानव-कल्याण की आत्मिक भावना रखना संस्कृति है, तो मानव-समाज का बाहरी आचरण सभ्यता है। इस तरह सभ्यता स्थूल होती है और उसके द्वारा हमारे रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि का परिचय मिलता है, जबकि संस्कृति मन के भावों का परिष्कृत रूप है। इसके साथ ही हमारे विचार से संस्कृति आंतरिक वस्तु है और सभ्यता बाहरी।

© JCERT not to be republished

Notes

© JCERT not to be republished